

ed. Bomb. तं zu lesen) MBh. 14,249. यज्ञं प्रतिषेत्स्यति 1,1634. 2065.
 षिध्य R. GORR. 2,82,4. DAÇAK. 191,2. षिद्युम् SARVADARÇANAS. 108,13.
 Comm. zu TS. PRĀT. 8,8. pass. Nir. 2,14. ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. UP. S. 39.
 zu KĪND. UP. S. 61. DAÇAK. 82,10. SARVADARÇANAS. 38,21. Comm. zu
 TS. PRĀT. 14,33, v. 1. (ते zu lesen). षिद्ध unterlassen R. GORR. 2,
 125,16. ÇĀK. 182. verwehrt, untersagt, verboten, verneint KĀTJ. Çr. 1,6,
 8. 25,5,11. अनादिष्टे प्रतिषिद्धे वा LĀTJ. 10,3,8. KAUC. 32. 73. 86. Nir.
 2,14. M. 8,399. JĀG. 2,260. MBh. 4,111. HARIV. 4723. R. 3,13,25.
 SUÇR. 1,35,20. RAÇH. 8,23. 9,74. ÇĀK. 78,15. VARĀH. BRH. S. 79,5.
 MĀRK. P. 15,41. BRĀG. P. 1,3,33. 3,32,16. 5,26,3. KĪC. zu P. 4,4,71.
 Schol. zu 6,3,42. SARVADARÇANAS. 115,14. 168,14. Comm. zu TS. PRĀT.
 1,4. verneint so v. a. mit einer Negation versehen AV. PRĀT. 4,56. P.
 8,1,44. gaṇa याज्ञादि zu 3,1,134. षिद्धवत् der Etwas verwehrt —
 untersagt hat RĪGĀ-TAR. 1,114. — Vgl. प्रतिषेद्धर णिङ्. — caus. 1) ab-
 wehren, abhalten, abweisen: अमात्यान् ÂÇV. GRH. 4,8,33. नक्षेताम् —
 शपत्तिं प्रत्यषेधयत् MBh. 1,1594. 2,1787. 4,468 (प्रत्यषे° mit der ed.
 Bomb. zu lesen). HARIV. 946. 14247. R. 2,96,42 (105,41 GORR.). 4,9,
 63. अत्राणि MBh. 5,7171. मृत्युश्च प्रतिषेधितः R. 5,78,14. — 2) Etwas
 verwehren, untersagen, verbieten: मार्गं वातस्य HARIV. 10443. विधावप्र-
 तिषेधिते MBh. 12,350. Comm. zu TS. PRĀT. 13,3. negiren SARVADAR-
 ÇANAS. 8,19.

— विप्रति, partic. षिद्ध 1) verwehrt, untersagt KĀTJ. Çr. 4,3,19.
 MBh. 5,4489. — 2) entgegengesetzt, widersprechend Nir. 1,15. P. 2,4,
 13. UTTARAH. 108,3 (146,7). ÇĀṆK. zu BRH. ĀR. UP. S. 38. अज्ञो (abl.)
 वृज् विप्रतिषिद्धम् so v. a. विप्रतिषेधात् VĀRT. 2 zu P. 4,2,39. पूर्व°
 (vgl. पूर्वविप्रतिषेधं unter विप्रतिषेध 2) VĀRT. 2 zu P. 2,4,12. 1 zu 85.
 2 zu 4,2,39. 1 zu 5,1,2.

— संप्रति Jmd abhalten: तथैव मुहुर्दं प्राप्तं कुर्वाणं कर्म पापकम् । प्रा-
 ष्ठाः संप्रतिषेधन्ति यथाशक्ति पुनः पुनः ॥ MBh. 10,184.

— वि, गङ्गा विसेधति (गौतौ) P. 8,3,113. Schol. VOP. 8,45.

2. सिध् (vgl. साध्), सिध्यति DRĪTUP. 26,83 (सिद्धौ). सिषेध, असेत्सी-
 त्, सेत्स्यति (vgl. KĀR. 4. 8 aus SIDDH. K. zu P. 7,2,10). med. nur des
 Metrums wegen. 1) zum Ziel kommen, treffen: इषवः सिध्यति लघ्वे चले
 ÇĀK. 38. — 2) frommen, fruchten, Erfolg haben; gelingen, in Erfüllung
 gehen, zu Stande kommen: नामै विशुन्न तन्युतुः सिषेध nicht half ihm
 Donner und Blitz RV. 1,32,13. यस्मादृते न सिध्यति युज्ञः 18,7. नहि
 प्रज्ञापेता धीः का च न सिध्येत् KAUSH. UP. 3,7. कृतः पुरुषकारश्च सो ऽपि
 दैवेन सिध्यति Spr. (II) 1852. दैवं हि मानुषोपेतं भृशं सिध्यति 2972.
 5124. 5161. उपायाः साम u. s. w. सम्यक्प्रयुक्ताः सिध्येयुः JĀG. 1,345.
 यदि युद्धानि वचनैः सिध्येयुः (सिद्धेयुः ed. Calc., येत्स्यते die neuere Ausg.)
 HARIV. 10745. सेत्स्यते स च कार्यार्थः 3125. 3979. R. 5,1,91. तथास्य स-
 र्वार्थाः सिध्यन्ति Spr. (II) 5134. DAÇAK. 89,12. उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार-
 याणि न मनोरथैः Spr. (II) 1249. 3215. 7508. KATHĀS. 18,243. BHĀṬ. 12,
 14. क्रिया साध्येष्वपि न सिध्यति SUÇR. 1,127,20. कुशलान्याप्नु सिध्यन्ति
 नेतराणि कृतानि यत् BRĀG. P. 4,18,7. विच्छिद्यन्ते समारम्भाः सिध्यन्ते
 चापि दैवतः Spr. (II) 6062. पराक्रमाः R. 2,25,19. विक्रमाः 5,80,9. मनो-
 रथाः 2,25,37. Spr. (II) 1248. इच्छा KATHĀS. 6,157. वाञ्छा 9,21. ईप्सितम्
 22,170. समीकृतम् 37,29. मानसः संकल्पः MBh. 5,2339 (med.). BRĀG. P.

VII. Theil.

8,24,60. प्रतिज्ञा KATHĀS. 38,41. यत्ने कृते यदि न सिध्यति को ऽत्र दोषः
 Spr. (II) 1253. 3314. VARĀH. BRH. S. 98,7. 104,61. KATHĀS. 15,24. 61,
 34. 67,52. यदि वचनमात्रदेवाधिपत्यं सिध्यति Hit. 84,7. Verz. d. Oxf.
 H. 68,a,3 v. u. (सेत्स्यति st. सेप्सति zu lesen). 236,b,9. RĪGĀ-TAR. 4,
 564. SARVADARÇANAS. 15,9. 97,12. 126,7. 147,2. LALIT. ed. Calc. 271,15.
 16 (सिध्यताम् ohne Noth st. सिध्यतु). so v. a. entstehen: सिध्यन्ति जीव-
 त्स्युतं वर्धमानाः । लोका यतः BRĀG. P. 8,5,33. — 3) giltig sein: समस्त-
 र्शनात्साध्यं श्रवणाच्चैव सिध्यति M. 8,74. व्यवहारः 163. JĀG. 2,32. (वृ-
 द्धिः Zins) कृतानुसारादधिका व्यतिरिक्ता न सिध्यति M. 8,152. — 4) Jmd
 (gen.) zu Theil werden PRAB. 61,14. — 5) in Ordnung kommen, geheilt
 werden: काकायां नैव सिध्यति ist unheilbar KĀRAKA 8,5. ये ये ग्रहा न
 सिध्यन्ति SUÇR. 2,536,8. येनैष मे कश्चित् ऽतिरिरेमयात्मा । सिध्येत
 BRĀG. P. 3,23,11. — 6) sich aus Etwas ergeben, folgen, sich als richtig
 erweisen, bewiesen sein: तेन सिध्यति माणवः KĀR. zu P. 4,1,161. PAT.
 (unzählige Male). तद्स्मात् सिध्यति PAÑĀT. 59,9. Comm. zu TS. PRĀT.
 2,25. 8,8. 16. 9,7. 13,14. 16,18. zu ĠAIM. 1,9. SARVADARÇANAS. 28,16.
 126,9 (मा सेत्सीत्). 137,6. — 7) sich in Jmds Willen fügen, nachgeben:
 एवं कलिङ्गसेनासौ तव — सेत्स्यति KATHĀS. 30,17. अथ वीर्योत्कटः श-
 त्रुपतो भेदेन सिध्यति 434. 3435 (oder zu 8). — 8) sein Ziel erreichen.
 Erfolg haben (von Personen): सिध्यन्ति कर्मसु मङ्गलत्वमपि यन्मियोऽप्याः Spr.
 (II) 7030. 3435 (oder zu 7). अनर्थाः संशयावस्थाः सिध्यन्ते मुक्तसंशयाः MBh.
 3,1244. das höchste Ziel erreichen, vollkommen —, glücklich werden 29.
 8203. R. 7,36,45. ÇĀTR. 1,285. BRĀG. P. 4,12,49. 5,18,10. 6,14,4. —
 partic. सिद्ध 1) adj. a) getroffen: सिद्धलक्षणे वापोन KATHĀS. 112,56. —
 b) erfolgt, gelungen, zu Stande gekommen, erreicht, vollbracht; = नि-
 ष्यन्न AK. 3,2,50. TRIK. 3,3,224 (निष्यन्दन?). H. 1487. an. 2,255. MED.
 dh. 24. कार्य Spr. (II) 3216. सामसिद्धानि कार्याणि 7012. 7018. साकृत्-
 सिद्धकार्यं VARĀH. BRH. S. 69,28. सत्कर्मन् (सत्कर्म ज्ञ° zu schreiben)
 RĪGĀ-TAR. 5,115. अर्थ DAÇAK. 89,9. BRĀG. P. 2,2,3. आरम्भ MEGH. 72.
 मनोरथाः PRAB. 18,4. प्रयोजन PAÑĀT. 44,10. समीकृत Hit. 44,7. स्वा-
 युधैकसिद्धे मृगयारसे KATHĀS. 21,16. निमित्तैः साध्यसिद्धिः die noch in Er-
 füllung gehen sollten und die schon in Erfüllung gegangen waren R. 5.
 28,16. — c) eingegangen (von Geldern): अर्थ Spr. (II) 4500. — d) ver-
 fertigt: भ्रमसिद्धो दसिदसजः शङ्कुः GOLĀDBJ. JANĀDBJ. 9. zubereitet, fer-
 tig gemacht, gekocht u. s. w. TRIK. 2,7,11. H. 412. M. 3,84. 121. MBh.
 13,2769. HARIV. 8441. R. 1,65,5. 3,52,51. SUÇR. 2,66,14. PAÑĀT. 116,
 22. BRĀG. P. 4,13,36. अर्थ° MĀRK. P. 51,33. सु° Spr. (II) 4216. अनल°
 MBh. 3,2943. उखा° H. 411. मृगालविना° SUÇR. 2,38,7. वस्तापड° 155,
 1. — e) giltig: अ° P. 6,1,86. 4,22. 8,2,1. — f) zu Theil geworden: त-
 पःप्रभावसिद्धाभिर्विशेषप्रतिपत्तिभिः RAÇH. 15,12. नैसर्गिकी सुरभिः कु-
 मुमस्य सिद्धा मूर्ध्नि स्थितिः so v. a. eigenthümlich, eigen UTTAR. 7,1 (10,
 8 = MĀLATIM. 160,5). अविकृति° so v. a. unerkünstelt, natürlich 113,
 16 (154,3). अक्षरूपत्वम् u. s. w. प्रकृतिसिद्धिं हि दुरात्मनाम् von Natur
 eigen Spr. (II) 3. 6147. स्वभाव° 5890. निर्मा° 5857. ज्ञाति° KATHĀS.
 39,108. सिद्ध = नित्य TRIK. 3,3,224. H. an. Bei PAT. in der Einl. zu MA-
 HĀBH. (1,12, a lith. Ausg.) ist सिद्ध = नित्य so v. a. unvergänglich, unver-
 änderlich; so sage man सिद्धा द्यौः, सिद्धा पृथिवी, सिद्धमाकाशम्. — g) in
 Ordnung gekommen, geheilt: eine Person Spr. (II) 356. — h) aus Etwas sich